21वीं शताब्दी में नीति शतक की शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

नितेश कुमार नागर*

सारांश:- जीवन को सुखी समृद्ध और खुशहाल बनाना ही मनुष्य के जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। अपने जीवन से भय क्रोध घृणा अहंकार एवं द्वेष को मिटाकर अपनी उर्जा सकारात्मक कार्यों में लगाना चाहिए जिससे जीवन का मुख्य उद्देश्य प्राप्त हो सके जिससे समाज के साथ राष्ट्र भी प्रगति कर सके।नीति शतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है क्योंकि आज के समय में छात्र के साथ शिक्षक भी दिक भ्रमित होकर अपनी ऊर्जा का ह्रास करते हुए कुंठा से ग्रसित होकर अपना जीवन नष्ट कर लेता है। इसलिए उन्हें बचाने के लिए नीति शतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है।

मुख्य शब्द- नीति शतक, वर्तमान समय, मानव जीवन,संस्कृत संस्कृत भाषा प्राणी मात्र का हित करने वाली भाषा है क्योंकि यह भाषा प्राचीन होने के साथ-साथ सभी भाषाओं की जननी है। 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय'की भावना संस्कृत कव्यों के माध्यम से जन जन तक पहुंच कर उन्हें प्रेरित करना है।

संस्कृत काव्य के द्वारा मनुष्य के जीवन चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। काव्य की रचना यश प्रदान करने वाली, अमंगल को हरने वाली, ज्ञान प्रदान करने वाली तथा अर्थ उत्पन्न करने के साथ-साथ भार्या के समान अच्छे उपदेश देने वाली होती है।
अदोषता, रसवत्ता एवं रमणीयता — इन तीन विशिष्टताओं से युक्त लक्षण प्रस्तुत कर संस्कृत-आचार्यों ने काव्य में भाव, कला एवं बुद्धि का समाहार किया है।

काव्यम यश से अर्थ कृते व्यवहार विदे शिवेत्तर रक्षते।

सद्य: पर निवृत्तये कांता सममित यो उपदेश युजे।।

कुञ्जी शब्द :- कुंठा, ग्रसित, रसवत्ता एवं रमणीयत |

*असिस्टेंट प्रोफेसर, महाराजा महाविद्यालय उज्जैन

ईश्वर के द्वारा जिस संसार की रचना की गई है वह दुख और प्रपंच से परिपूर्ण है। अर्थात इस संसार में आगमन और गमन का बुद्धि पूर्वक विवेचन होता है तो उस समय नीति ग्रंथों के अध्ययन के अभाव में मनुष्य ईश्वर को उलाहना देने के साथ-साथ प्रतिपल दुख का अनुभव करते हुए अपनी जीवन लीला को समाप्त कर देता था। इसलिए इस विषय पर प्राचीन मनीषयों ने चिंतन किया कि मनुष्य का जीवन किस प्रकार सुखी बनाया जाना चाहिए इस पर विचार करते हुए प्राचीन काल में विभिन्न नीति ग्रंथो की रचना की गई जिसका प्रयोजन मनुष्य के संपूर्ण जीवन की गतिविधियों को नियम पूर्वक उचित प्रक्रिया से संपादित करना था।

अतः शुक्र नीति, चाणक्य नीति, नीति शतक जैसे अनेक ग्रंथ प्रतिपादित किए गए जिसमें मनुष्य के जीवन से संबंधित संपूर्ण व्यवहारिक ज्ञान को समाहित करने का प्रयास किया गया। कौटिल्य का अर्थशास्त्र मुख्य रूप से न्याय विषयक ग्रंथ है जिसमें नीति का वर्णन किया गया है।नीति ग्रंथों की श्रेणी में याज्ञवल्लक स्मृति, मनुस्मृति, नारद स्मृति ग्रंथो की मूल रूप से गणना की जाती है।इन ग्रंथो में जीवन जीने के तरीकों आहार और व्यवहार को नाना प्रकार से व्यक्त किया गया है।श्री विष्णु शर्मा द्वारा रचित पंचतंत्र और नारायण पंडित के द्वारा रचा गया हितोपदेश कथाओं के माध्यम से नीति का सम्यक ज्ञान प्रदान करता है।

चाणक्य नीति दर्पण एक विख्यात ग्रंथ है इसमें मंगलाचरण के अंत में ग्रंथ के प्रयोजन को निरूपित करते हुए ग्रंथकार ने लिखा है कि जो मनुष्य नीति शास्त्र को पढ़ता है वह अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का भली भांति ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः। धर्मोपदेशं विख्यातं कार्याऽकार्य शुभाऽशुभम्॥

यहां पर आचार्य चाणक्य के द्वारा यह कहा गया कि हमें लोगों की मंगल कामना के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

आचार्य भर्तृहरि ने भी लोकहित की कामना से नीति शास्त्र की रचना की जो नीति शतक के नाम से प्रसिद्ध है।

नीति शतक को जानने से पूर्व हमें नीति क्या है?, इसे जानना आवश्यक है।नीति मानव कल्याण के लिए समाज को सुव्यवस्थित सुखी समृद्ध बनाने के लिए जिस प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है उसे नीति कहते हैं।

चाणक्य नीति दर्पण के अनुसार नीति की परिभाषा संस्कृत में इस प्रकार है:

नीतिः प्रज्ञा प्रवृत्तिः

अर्थात्, नीति वह प्रज्ञा या बुद्धिमत्ता है जो व्यक्ति को सही और उचित कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

एक अन्य परिभाषा संस्कृत में इस प्रकार है:

नीतिर्नाम सा या लोके साधाराणी धर्मतः

अर्थात्, नीति वह सामान्य धर्म है जो समाज में सभी के लिए समान रूप से लागू होता है।

नीति शतक शब्द की संस्कृत में उत्पत्ति इस प्रकार है:

नीति शतक = नीति + शतक

नीति: नीति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "नि" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है "निर्देश" या "मार्गदर्शन"। नीति शब्द का अर्थ है "नैतिक मूल्यों का पालन करना" या "नैतिक निर्णय लेना"।

शतक: शतक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "शत" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है "सौ"। शतक शब्द का अर्थ है "सौ श्लोकों का संग्रह" या "सौ नीतियों का संग्रह"।

इस प्रकार, नीति शतक शब्द का अर्थ है "सौ नीतियों का संग्रह" या "सौ नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए मार्गदर्शन"।
नीति शतक एक मुक्तक काव्य है और मुक्तक काव्य वह है जिसका प्रत्येक श्लोक अपने अर्थ के द्वारा प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। इसमें एक पद का दूसरे पद से कोई संबंध नहीं होता है। नीति शतक में कुल 121 श्लोक हैं जिसमे राष्ट्र एवं मानव कल्याण की भावना निहित है नीति शतक के अध्ययन मात्र से मनुष्य अपने जीवन का कल्याण कर सकता है एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। नीति शतक जीवन के कठोर अनुभव के आधार पर लिखा गया एक ग्रंथ है। तत्कालीन समाज अज्ञानता ईर्ष्या द्वेष पाखंड कठोरता क्रोध और अहंकार जैसे दुर्गुणों से ग्रसित था नीति शतक ने

तत्कालीन समाज को राह दिखाई। नीति शतक के श्लोक वर्तमान समय में अपनी उपादेयता सिद्ध करते हैं।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः। ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।।3।।

अज्ञ अर्थात् मुर्ख मनुष्य को सरलता से मनाया जा सकता है। विशेषज्ञ अर्थात् बहुत कुछ जानने वाले को भी प्रसन्न किया जा सकता है या सरलता से मनाया जा सकता है। परन्तु अल्पज्ञ अर्थात् थोडा सा ज्ञान पाकर अपने आपको निपुण समझने वाले व्यक्ति को भगवान ब्रह्मा जी भी प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञातायाः। विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।7।।

विधाता ने अज्ञानी मूर्ख मनुष्यों के लिए विद्वानों की सभा में सुशोभित रहने के लिए अज्ञान आवरक तथा अपने अधीन रहने वाला मौन को उत्तम गुण माना है।

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः। वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।19।।

मनुष्य की शोभा न तो आभूषणों से होती है और न ही चन्द्रमा के तुल्य हार से, न स्नानं, न चन्दनादि का लेप लगाने से तथा न ही बालों को सज्जाने और संवारने से। केवल एक मात्र संस्कार युक्त वाणी को बोलने से मनुष्य की शोभा बढती है। समय के साथ- साथ सभी आभूषण नष्ट हो जायेंगे परन्तु वाणी आभूषण एक ऐसा आभूषण है जो सर्वदा रहने वाला है।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः। विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः।।20।।

विद्या ही मनुष्य की का सर्वश्रेष्ठ स्वरुप और अत्यंत गुप्त धन है। विद्या भोग पदार्थ देने वाली तथा यश और सुख प्रदान करने वाली है। यह गुरुओं की भी गुरु है। विद्या विदेश में भी बन्धुजन का काम

करती है। विद्या परम भूततत्त्व है। राजा लोग भी विद्या की ही पूजा करते हैं, धन की नहीं, इसी कारण विद्या से हीन मनुष्य को पशु के समान माना है।

नीति शतक में सुख दुख का संपूर्ण विवेचन गंभीरता पूर्वक किया गया है जो निश्चित रूप से पथ प्रदर्शक ग्रंथ है। बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ और सर्व शिक्षा अभियान इसी से प्रेरित होकर लिया गया है। संपूर्ण विश्व में भौतिकतावादी संस्कृति का बोलबाला है इस कारण मनुष्य अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य से भटकता हुआ प्रतीत होता है जिसमें नीति शतक मनुष्य को अपने उद्देश्यों से परिचित कराकर उसे जीवन की घोर निराशा और भय से मुक्त करा कर जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।वर्तमान समय में छात्र एवं शिक्षक के साथ-साथ संपूर्ण समाज के लिए नीति शतक का अध्ययन उपयोगी है।नीति शतक के अध्ययन से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में अपने कर्तव्य का पालन उत्कृष्ट रूप से कर सकता है और छात्र भी विद्या अध्ययन पूर्ण एकाग्रतापूर्वक कर सकते हैं। इस प्रकार नीति शतक मनुष्य को कुमार्ग से हटाकर सदमार्ग की ओर प्रेरित करता है।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>:-

1. मम्मट कृत काव्य प्रकाश
2. चाणक्य नीति दर्पण पृष्ठ क्रमांक एक एवं दो
3. चाणक्य नीति दर्पण प्राक्कथन पृष्ठ क्रमांक 1
4. नीतिशतक भूमिका पृष्ठ क्रमांक 5
5. नीतिशतक भूमिका पृष्ठ क्रमांक 2
6. नीतिशतक भूमिका पृष्ठ क्रमांक 12
7. नीतिशतक भूमिका पृष्ठ क्रमांक 15